

---

# Shri Sadashivendra Stotram

श्रीसदाशिवेन्द्रस्तोत्रम्

## Document Information

---

Text title : Shri Sadashivendra Stotram  
File name : sadAshivendrastotram.itx  
Category : deities\_misc, vAsudevAnanda-sarasvatI  
Location : doc\_deities\_misc  
Author : vAsudevAnandasarasvatI TembesvAmi  
Description-comments : From stotrAdisangraha  
Latest update : May 12, 2021  
Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

March 1, 2026

*sanskritdocuments.org*

---

# Shri Sadashivendra Stotram

## श्रीसदाशिवेन्द्रस्तोत्रम्



स्वानन्दरसोन्मत्तः स्वाङ्गं विस्मृत्य यो नरो नर्ति ।

स यतिः सदाशिवेन्द्रो विद्वेढमुक्तिस्थितौ वरीवर्ती ॥ १ ॥

सदाशिवाभाषणमन्यवीक्षया सदाशिवाचारमचिन्त्यदीक्षया ।

सदाशिवाभं प्रणामामि सद्गतिं सदाशिवायेन्द्रसरस्वतीयतिम् ॥ २ ॥

भूत्या छत्रो जातवेदा धवाष्टभूत्या

छत्रो योऽपि योन्मत्तयेष्टः ।

काष्ठां काश्चित् प्राप्य रेभे स्वतन्त्रः

काष्ठा काश्चिधा विमुक्तेरमन्त्रतः ॥ ३ ॥

मुक्त्याश्लिष्टो भाति बालूपथानः क्ष्मातल्पोऽसौ द्विज्पटः सावधानः ।

धाम्नि स्वीये योगविध्यकवर्ती जूर्तिर्धो द्विक्षाविनी यस्य कीर्तिः ॥ ४ ॥

नञ्जं दृष्ट्वा निजदयितया नोदितो भ्वेच्छ अेतं

शान्तं दान्तं प्रसभमसिनाऽऽलन् विव्यथे न ।

कृतांसोऽपि व्यथितमनसे सैनसे भग्नबाहुं

मन्दाङ्गान्तावयनगतयेऽदृश्यत् पूर्वं आलुः ॥ ५ ॥

भ्वेच्छो विरक्तः शरणां जगाम न्यूनोऽप्यनुग्राह्य उतापि तामसः ।

धत्थं विचार्यावददे परेऽन्त्यज श्रद्धस्व नित्यं दृढयेप्सितं त्यज ॥ ६ ॥

तथेति कत्राणमपास्य सोऽनमत्तथायरन् सोऽपि गतिं भतागमत् ।

यदा कुवंशस्थनरोऽप्यगाद्गतिं तदा सुवंशस्थ धयान्न किं गतिम् ॥ ७ ॥

धदृक्प्रभावोऽत्र सदाशिवेन्द्रो जागत्र्यतोऽत्रापि शिवोऽप्युपेन्द्रः ।

विशुद्धसत्त्वं ननु भूतिकाम आत्मज्ञामर्थेत्तमु मुक्तिकामः ॥ ८ ॥

नामादिभिः परतरं भूमानं यो निरन्तरम् ।

अभेदेनाप स ब्रह्म न ब्रह्मज्ञः श्रुतीरणात् ॥ ९ ॥

यङ्के वदेत्तं डिमु वासुदेवः आत्मज्ञमित्यादृत साधुभावः ॥ १० ॥

एति श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीसदाशिवेन्द्रस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

---

——  
*Shri Sadashivendra Stotram*

pdf was typeset on March 1, 2026

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

